Semester – V, MJC = 9
MIC = 6

बचत तथा विनियोग
(Saving and Investment)

आज की आय से बचाया हुआ धन भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है जो आयोजित या अनियोजित भी हो सकते हैं। सावधानीपूर्वक बचत आयोजन का ही परिणाम है, धन का विनियोग करने के लिए बहुत से मार्ग उपलब्ध है – बैंक, डाकघर, जीवन बीमा, विभिन्न कम्पनियों के शेयर तमथा बॉण्ड पत्र इत्यादि। विनियोग का मार्ग ऐसा चुनना चाहिए जो सुरक्षित हो, उचितदर से वापसी देता हो तथा धन का सुगम भुगतान हो।

कीन्स के अनुसार :– वर्तमान आय का वर्तमान उपयोग व्यय पर आधिक्य को बचत कहते हैं।

देशपाण्डे के अनुसार :– बचत मनुष्य की आय का वह भाग है जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति में उपयोग नहीं किया जाता है बल्कि भविष्य के उपयोग के लिए पूँजी का स्वरूप दिया जाता है।

आय के खोने का भय कुछ परिवारों में असुरक्षा की भावना उत्पन्न कर देता है इसीलिए अच्छे विनियोग तथा बचत के लिए प्रेरित करता है।

बचत की आवश्यकता :– (i) अनिश्चित भविष्य तथा आपातकाल की आशंका (ii) सेवानिवृति (iii) बच्चों की बढ़ती आवश्यकता – शिक्षा, विवाह, अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य– घर की आवश्यकता, फर्निचर, यात्रा

बचत से लाभ :– (i) बचत परिवार को आर्थिक रूप से आत्मविश्वासी बनाता है।

(ii) बचत, आय और व्यय के मध्य संतुलन बनाये रखता है।

(iii) बचत पारिचवारिक जीवन चक्र की विभिन्न स्तरों पर धन की आवश्यकताओं की असमानताओं में सहायता करती है।

(iv) बचत धन खर्च के लिए हमें क्रमवद्ध पद्धति विकसित करने में सहायता देता है।

(v) बचत अधिक धन प्राप्त करने में सहायक होता है।

(vi) बचत भविष्य के आपातकालों तथा असुरक्षा के दिनों में प्रयोग किया जा सकता है।

(vii) बवत जीवन स्तर में सुधार ला सकता है।

(viii) जब कीमत निम्न हो तो बचत करनी चाहिए, मँहगाई में कीमतें उच्च होती है।

(ix) बचत राष्ट्र प्रगति में भी उच्च स्तर की सहायता प्रदान करती है।

<u>बचत तथा संचय में अंतर</u> :— अर्थशास्त्र के अनुसार उस धनराशि को बचत कहते हैं जिसे उत्पादक कार्यों में विनियोग के लिए लगाया जा सके लाभांश सहित प्राप्त हो, जबकि संचय उस धनराशि को कहते हैं जिसे संदूक में या जमीन में गाड़कर बंद करके रखी जा सके इसके मूलधन में कोई वुद्धि नहीं होती है।

Madhurima Mishra

Home Science